Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
Volume - 2 | Issue - 11 | July - 2016

''संस्कृत ओर संस्कृति के विकास में भोज का योगदान''

श्रीमती सुनीता पन्द्रो
एम.ए. नेट क्वालीफाइड , समाजशास्त्र बरकतउल्ला , वि.वि. भोपाल म.प्र.

प्रस्तावना

''या कुन्देन्दुतुषार हारघवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावर दण्ड मण्डित करा या खेत् मासना।
या ब्रम्हाच्युत शंकर प्रभृतिभिदैवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाऽयापहा।।

''राजा भोज का पूर्व एतिहासिक नाम भूपत शाह था इनकी पत्नी रानी कमलापति गोण्ड सम्राज्य की रानी थी, विश्व प्रसिद्ध संस्कृति बड़ा तालाब छोटा तालाब इनकी देन है। भोजपाल से भोपाल बना। धार नगरी से राजा को परमार वंश बताया गया। राजा गोण्डी भाषा (बोली) सस्कृंत पारसी बोलते थे। जन्म ग्यारहवी सदी के आरम्भ में माना जाता है। यह नृप अज्ञि और असि के महाधनी थे। इनकी प्राकृति रणभूमि और विधाव्यसन प्रसिद्ध थी। अतः मालवा भूमि के पूर्ववर्ती राजा की अपेक्षा इनको प्रभूत यश और कीर्ति प्राप्त हुई थी। विद्वानों के आश्रय दाता महादानी भोज की नगरी धार में बनी भोजशाला में ''सरस्वती की भव्य प्रतिमा विराजती थी। जिससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय इतिहास के वे प्रथम भूपति थे जिन्होने सरस्वती साधना, लक्ष्मी की अराधना और राष्ट्र का सर्वाधिक उन्नयन किया था। एक और भोज ने लगभग ८० संस्कृत ग्रंन्थों का निर्माण कर विश्व कीर्तिमान बनाया था तो दूसरी और भूरिशः राजाओं को रणभूमि में पराजित कर अपनी वीरता का लोहा मनवाया था। राजा भोज अप्यन्त विनम्र धार्मिक,वीर, सहिष्णु मेघासम्पन्न होने के साथ ही संस्कृत और संस्कृति के सहदय उपासक एवं साधक थे। एसी मान्यता है कि भोज १०४ गीत प्रबन्धों की भी रचना की थी। अनेक झीलों का निर्माण जिनमें भोपाल झील (लाताब) भी सम्मिलित है, बहुराः मन्दिर भी परिगणित है, यह सब भोज की नवन वोन्मेष शालिनी प्रज्ञा का प्रतिफल थे। ये महान समाज सुधारक, सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रचारक एवं आश्रयदाता और संरक्षक भी थे। महादानी तो इतने थे कि विदवानों को कहना पड़ा था कि ''प्रव्यक्षर'' ''लक्ष ददौ'' संस्कृत भाषा के बहुज्ञ और संस्कृत की विविध विघाओं पर अविराम लेखनी चलाने वाले भोजराज प्राकृत भाषा के भी महान ज्ञाता थे, क्योंकि इन्हानें प्राकृत में भी अनेक रचनाएँ सृजित की थी।

कविराज भोज ने संस्कृत साहित्य की सभी विद्याओं पर अपनी लेखनी को प्रवृत्त किया था जिनमें साहित्य, और राजनीति, स्थापव्य, संगीत चम्यू आयुर्वेद आदि विघा के प्रचुर ग्रंथ समेकित है। इनकी रचनाओं में श्रंगार प्रकाश, समराड, गण सूत्रधार, सरस्वती कष्ठा भरणम, रामायण चम्यू (भोज चम्यू) नीति-साहित्य चाणक्य-राजनीतिशास्त्र, चारुचति, राजमार्तण्योगसार, युक्ति कल्पतरु, शालिकथा, महाकाली विजय, विघा विनोद, अवनिकर्मरातम आदि प्रथित है।

वर्तमान परिप्रक्ष्य में जब संस्कृत और संस्कृति के लिये संक्रमण काल उपस्थित हो चुका है, हमारा समाज किंकतंव्य विमूढ़ हो गया है, नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा हैं, संस्कार और संस्कृति केवल पुस्तकों या अतीत की वस्तु बन गयी है ऐसी परिस्थिति में हम युवाओं को एक नई दृष्टि नई राह एवं बुद्धि जीवी वर्गो से जुड़ाव होकर खोज में जुट जाना है। कदम से कदम मिलाकर एक प्राचीन संस्कृति, संस्कार, एवं सांस्कृतिक विरासत जो हमारी राष्ट्रीय धरोहर है, इतिहास साक्षी है, भारत एवं समृद्ध शाली देश, एवं हमारा मध्य प्रदेश संस्कृति प्रधान कला, ललित कला, चित्रकला लोक नृत्य, सृजन पीठ, मध्यप्रदेश की बोलियाँ, लोकगीत, (मध्यप्रदेश की प्रमुख साहित्यिक एवं ललित कला आकादमियाँ)

१.मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद के द्वारा आदिवासी लोक कला और जन जीवन पर ''चौमासा'' पत्रिका का हर चौथे माह प्रकाशन किया जाता है।
२.भारत-भवन वास्तुकार चार्ल्स कुरियन थे।

३.मध्यप्रदेश तुलसी अकादमी का चित्रकूट शोध संस्थान अन्तर्राष्ट्रीय तुलसी विघापीठ के रुप में विकसित किया जा रहा है।
४.मध्यप्रदेश माध्यम द्वारा ''रोजगार-निर्माण''व''पंचायिका'' का प्रकाशन किया जाता है।

चित्रकला

बुन्देलखण्ड अंचल की लोक चित्रकला	मालवा अंचल की लोक चित्रकला
१. सुरती- भित्ती मिश्रण महिलाओं द्वचरा दिवाली पूजन के समय	१. दिवासा- नाग भेरुजी सरवण श्री कृष्ण जनमाष्टमी संया, माय माता।
२. नौरता- नवरात्रि पर कुँआरी कन्याओं द्वारा	२. चित्रकला- नोहडोरा, गोडो में प्रचलित है।
३. भोरत- विवाह भित्ति रेखांकन	३. आनन्द सिंह श्याम तथा जनगण सिंह श्याम का सम्बन्ध गोंडो चित्रकला से है।
४. गोदन गोवर्धन- दिवाली के अवसर पर गोवर्धन पूजा के समय	४. प्रेम कलां- भीली चित्रकला के सर्वप्रमुख चित्रकार है।
५. चौक- '' प्रत्येक दिन और शुभ अवसर पर	५. बैगा चित्रकलां- इसके प्रमुख चित्रकार हैं, हरिसगँ बैगा, जयलाल मरादी व श्री व्रेलगूर भण्डावी।
	६. गोदना चित्रकलां- प्रकार एवं डिजाईन १. कपाड़गोदाय २. छाती गोदाय ३. पिण्डरी गोदाय ४. पिछाड़ी गोदाय ५. पुखड़ा गोदाय ६. बाँह गुदाय ७. जाँघ गोदाय रिसर्चर द्वारा शोधअध्ययन फील्ड अपने शोध श्रेत्र बैगाजन जाति एक समाजशास्त्रीय अध्ययन में मण्डला जिले के

नारायणगंज विकासखण्ड की प्राचीन संस्कृति बैगा जनजाति महिलाओं, बुजुर्ग महिला को दाई कहते है, ''बैगादाई ओ'' कला एवं ''जन्नी जन्म यूरिचय स्वर्गादीप गरीयसी'' अर्यात जन्नी जन्म देने वाली माता स्वर्ग से भी बढ़कर है।

''किसी भी दूसरे राष्ट्र प्राचीन हो या आधुनिक इतनी उच्च संस्कृति का निर्माण नही किया किसी भी धर्म को जीवन दर्शन बनाने में इतनी सफलता नही मिली यहाँ तक की कोई मानवीय ज्ञान ''समृहय'' और शक्ति शाली नही हो सकता जितना कि भारत में हुआ है।''

''मैक्स यूलर जर्मन''
(विद्धान)

''महिलाएँ शरीर में अधलुखे वस्त्र पहनकर बच्चे का बागा पाकर जोखिम एवं साहस से जंगल में (भुनसारे) पुरुष की भांति जंगली कन्दमूल काँदा औषधियाँ, मछली केकड़ा पकड़ने चली जाती है अंधेरे में प्रकृति की शक्ति रहती है। जितने भी वनोषियाँ का

प्रायोगिक एवं मेडिकल दवा बना रही है। (मेडिसिन की खोज ही आदिम जनजाति बैगा महिलाओं की देन है।) इसमें बैगा जनजाति महिलाओं की विशेष भूमिका एवं सहयोगा गौरान्वित है।'' यह हमारा प्राचीन संस्कृति राष्ट्रीय मानव प्राकृति पुत्री बैगा महिला की सांस्कृतिक विरासत है।

(रिसर्चर)
सुनीता पन्द्रों

पिथौरा भित्ति चित्र- झाबुआ का अनुष्ठानिक चित्र कर्म है। इसके लिखने वाले लिखन्दरा कहलाते है।
कुक्षी या छीपा शिल्प- भील जनजाति से संबंधित
प्रमुख चित्रकार है- श्री पैगा काव्या और श्रीमति भूमि बाई।
विशेष योगदान - संस्कृत नाटक के प्रारम्भ में पूर्व रंग की समस्त रीतियों का पालन किया जाता था। लगभग बीस छोटे छोटे नृत्य और संगीत की लघु रचनाएँ प्रस्तुत की जाती थी, जिनमें से नौपथ्य में ही होती थी। संगीत वादक वीणा मृदंग आदि वाघो को सुर करते थे। अभिनेता हस्त मुद्राओं का अभ्यास करते थे और नर्तकियॉ, घुँघरू बांधकर पॉव से ताल देती थी, संगीत और नृत्य का यह न्यास रंगमंच की देवी के प्रति कर्तव्य माना जाता था। इसका मतलब यह भी था कि दर्शक नाटक को पूर्ण मनोयोग से देखने के लिए तैयार हो जाएँ।

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ –

(अ) भारतीय संस्कृति की प्राचीनता - उदाहरण - भीम बेटका, में पाये जाने वाले शैलचित्र - नृवंशीय पुरातत्वीय प्रमाणों में यह सिद्ध हो चुका है।
(ब) भारतीय संस्कृति की निरन्तरता - प्राकृतिक देवी देवताओं की पूजा अर्चना, मातृ शक्ति, पितृ शक्ति धरती दहि - नदियॉ, बट, पीपल, बरगद, वृक्षों सूर्य देव, चन्द्रदेव - गोण्डवाना साम्राज्य के राजा भोज जिसका पूर्व नाम (भुपत शाह) था एवं धार नगरी में माता सरस्वती वादवाहिनी की मंदिर एक विश्व प्राचीन संस्कृति की जननी है।
(स) भारतीय संस्कृति का लचीलापन एवं सहिष्णुता - उदाहरण - इस दृष्टि से प्राचीन काल से बुद्ध महावीर के द्वारा, मध्यकाल में शंकाराचार्य, कबीर, गुरूनानक, चैतन्य महाप्रभु विवेकानंद महात्मा ज्योतिबा फुले इस प्रयास इस संस्कृति की महत्वपूर्ण धरोहर बन गये।
(द) भारतीय संस्कृति की ग्रहणशीलता - शक, हूण, यूनानी, कुषणा जैसी प्रजातियों के लोग घुलमिल गए।
(इ) अध्यात्मिकता एवं भौतिकता-
(ई) अनेकता में एकता

संस्कृति का अर्थ–

''संस्कृति शब्द अत्यन्त व्यापक है। व्याकरणीय की दृष्टि से इसका शब्दिक अर्थ ''अच्छी स्थिति'' सुधरी हुई स्थिति आदि का बोधक है। भारतीय चिन्तन में संस्कृति के पर्यप्य के रूप में आचार विचार शब्द प्रचलित रहा है। संस्कृति शब्द अंग्रेजी के कल्चर का अनुवाद है, जिसका सम्बन्ध परिष्कार करने ठीक करने से है।

संस्कृति की व्यापकता–

नृविज्ञान में संस्कृति शब्द का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थ में होता है। प्रसिद्ध मानव विज्ञानी मैलिनोवस्की के अनुसार मानव जाति की समस्त सामाजिक विरासत या मानव की समस्त संचित सृष्टि का ही नाम संस्कृति हे इस अर्थ में संस्कृति में शामिल है, मानव निर्मित वह स्थूल वातावरण, जिसे मानव ने अपने उद्यम, कल्पना, ज्ञान-विज्ञान और कौशल द्वारा रचकर प्रकृतिक जगत के उपर एक स्वनिर्मित कृत्रिम जगत स्थापित किया। नृविज्ञान इस मानव द्वारा निर्मित कृत्रिम जगत को ही संस्कृति की संज्ञा देता है। इस कृत्रिम जगत को रचने की प्रक्रिया में संस्कृति के अंतर्गत विचार, भावना, मूल्य, विश्वास, मान्यता, चेतना, भाषा, ज्ञान, कर्म, धर्म इत्यादि जैसे सभी अपूर्त तत्व स्वंयमेव शामिल है, जबकि दूसरी ओर संस्कृति में विज्ञान और टेक्नोलॉजी एवं श्रम और उद्यम से सृजित भोजन, वस्त्र, आवास और भोथ्तक जीवन को सुविधाजनक बनाने वाले सभी मूर्त और अमूर्त स्वरूप भी शामिल है। मानव विज्ञान संस्कृति के अमूर्त स्वरूपों की आध्यात्मिक संस्कृति कहता है और मूर्त रूपों की भौतिक संस्कृति की संज्ञा देता है। इस प्रकार इन दोनों संस्कृतियों के संयुक्त विकास से परिष्कार पाकर मनुष्य सुसंस्कृत बनता है।

निष्कर्ष–

संस्कृति से पूर्व भारतीय संगीत शब्द की उत्पत्ति प्राचीन संस्कृत वाड्मय में साम्यक गीतम के रूप में हुई है। भारतीय संगीत का आरंभ सामवेद से माना जाता है, वेदो में ही इसकी जड़े हैं। संगीत का विकास क्षेत्रीय प्रतिभा के अनुरूप लोक शैली में हुआ और धीरे धीरे इसने शास्त्रीय रूप धारण कर लिया भारतीय संगीत को दो शैलियॉ हैं :-

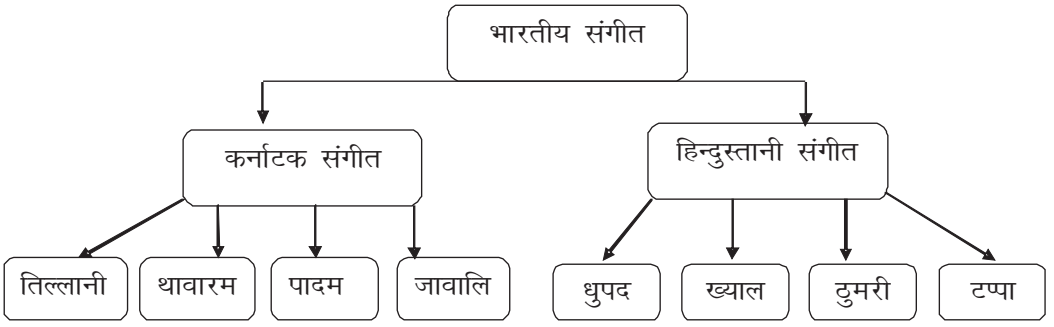

महादानी राजा भोज पूर्व नाम भुपत शाह गोण्डवाना साम्राज्य से राजा एवं रानी कमलापति गोण्ड साम्राज्य की रानी थी एवं विश्व सुन्दरी थी। जिन्होने छोटा तालाब में ही अपनी वीरगति को प्राप्त होकर जीवन लीला ''जल'' में ही समा गई इसका इतिहास में नाम अमर हे एवं महल आज सांस्कृतिक विरासत धरोहर असुरक्षित है तथा खण्डहर ना बने हमें अपनी विरासत की जननी की रक्षा कैसे करें? रानी ने अपनी सुरक्षा स्वयं किया एवं अंतिम समय जल में समा गई गोण्डवंश की रानी दुर्गावति की वीरगति कटार भौंपकर जीवनदान कर वीरगति प्राप्त होकर वीरांगना कहलाई। गोण्डवान अध्यात्म दर्शन इतिहास में एवं गोण्डवाना साम्राज्य के शासक राजा भोज को भुपद शाह ने परमार वंश की स्थापना उपेन्द्र कृष्णराज ने की जो प्रतिहारों तथा राष्ट्रकूटों के अधीन सामंत थे। इस वंश का प्रसिद्ध राजा भोज था।

विशेष

राजा भोज राजधानी धार बनाई।

१.राजा भोज ने भोजताल (भोपाल) सरस्वती मंदिर (धार) का निर्माण करवाया। संस्कृत विद्यालय और विजय स्तम्भ।

२.राजा भोज विद्वान संस्कृत ज्ञाता कवि थे।

३.रामरीगण सूत्रधार (शिल्पशास्त्र), सरस्वती कण्डमारण, सिद्धांत संग्रह, आयुर्वेद सर्वस्व, राजा मार्तण्ड, पोसूत्रवृत्ति, विधा विनोद, चारू चर्चा, शब्दानु शासन, युक्ति कल्पतम (विधि ग्रंथ) आदि ग्रंथो की रचना राजा भोज ने की।

४.इस वंश के राजा जयसिंह को हराकर भीम १ (चालुक्य) तथा कर्ण कल्चुरी, त्रिपुरी ने मालवा पर अधिकार कर लिया।

५.मध्यप्रदेश की भूसंहिता का क्षेत्र – गोंडवाना लैण्ड, भुजटिया के क्षेत्र के अंतर्गत आता है। जबकि मध्यप्रदेश में नीचे धारवाड़ क्रम शुरू होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१.मध्यप्रदेश सामान्य परिचय प्रकाशक महावीर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (इंदौर).

२.गोण्डवाना आध्यात्मिक दर्शन दिसम्बर २०१४ (छ.ग.).

३.गोण्डवाना तिथि पत्रक २०१४.

४.प्रतियोगिता प्रवेश – २००६ कोठारी इंस्टीट्यूट प्रकाशन, इंदौर (म०प्र०).

५.सामान्य अध्ययन राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय मध्यप्रदेश प्रकाशन (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी).

बैगा दाई के कोहनी गोदाय गोदने का एक दृश्य शोधार्थी के साथ

छाती गोदाय गोदने की अति आकर्षण दृश्य बैगा महिला के साथ शोधर्थी अगस्त 2014

शोधार्थी द्वारा किये गये शोध रिसर्च से गोदना चित्रकलां लिया गया

शोधार्थी सुनीता पन्द्रों द्वारा शोध रिसर्च क्षेत्र नारायणगंज वि.ख. जि.–मण्डला (म.प्र.) बरकतउल्ला वि.वि. भोपाल (म.प्र.) (चित्रकला गोदना प्रथा बैगा जनजाति महिलाओं की ऐतिहासिक संस्कृति जीवित है।)